



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 53]

नई दिल्ली, शुक्रवार, फरवरी 27, 2015/फाल्गुन 8, 1936

No. 53]

NEW DELHI, FRIDAY, FEBRUARY 27, 2015/PHALGUNA 8, 1936

## वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

वाणिज्य विभाग

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 फरवरी, 2015

अंतिम जांच परिणाम

**विषय :** चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'सोडियम साइट्रेट' के आयातों से संबंधित पाटनरोधी अंतिम जांच परिणाम ।

**फा. संख्या 14/23/2013-डीजीएडी.**—समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है), सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली अथवा नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

2. यतः निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है), को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत मै. पोजी फार्मा कैम प्रा. लि. (जिसे आगे याचिकाकर्ता अथवा आवेदक भी कहा गया है) का एक लिखित आवेदन अथवा याचिका प्राप्त हुई जिसमें चीन जन.गण. (जिसे आगे 'संबद्ध देश' कहा गया है) से सोडियम साइट्रेट (जिसे आगे विचाराधीन उत्पाद अथवा संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया था जिससे भारत में संबद्ध वस्तु के घरेलू उद्योग को क्षति हो रही थी ।

3. यतः घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने नियमों के अनुसार संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए दिनांक 28 फरवरी, 2014 को एक सावर्जनिक सूचना सं. 14/23/2013-डीजीएडी जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया ताकि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले आरोपित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और उसके प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने पर विचार किया जा सके ।

### क. प्रक्रिया

4. इस जांच में नीचे उल्लिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है :

- (i) प्राधिकारी ने नियमानुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पूर्व संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन का आरोप लगाने वाले आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावास को अधिसूचित किया ।

- (ii) प्राधिकारी ने संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए दिनांक 28 फरवरी, 2014 को एक सार्वजनिक सूचना सं. 14/23/2013-डीजीएडी जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया।
- (iii) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति के साथ एक पत्र समस्त ज्ञात निर्यातकों और अन्य हितवद्ध पक्षकारों/उद्योग एसोसिएशनों (जिनके व्यौरे घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) को भेजी और उन्हें नियमों के अनुसार निर्धारित समय सीमा के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।
- (iv) प्राधिकारी ने नियमों के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की एक प्रति उपलब्ध कराई। आवेदन की प्रति अनुरोध करने पर अन्य हितवद्ध पक्षकारों को भी उपलब्ध कराई गई थी।
- (v) संबद्ध देश में निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और निर्यातक प्रश्नावली की प्रतियां इस अनुरोध के साथ ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची सहित भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावास को भी भेजी गई थी कि वे संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा संबद्ध देश के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों को भी निर्धारित समय सीमाओं के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें।
- (vi) प्राधिकारी ने नियमों के अनुसार संबद्ध देश में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना मांगने के लिए निर्यातक प्रश्नावली भेजी :
- क. क्विंगडाओं सोनेफ कैमिकल कंपनी लि., शेनडांग, क्विंगडाओ, चीन।
  - ख. वाईफेंग वोट इंटरनेशनल बिजनेस कंपनी लि., शेनडांग, वाईफेंग, चीन।
  - ग. हाई हुई ग्रुप सीपी, लि., शेनडांग, रिझाओ, चीन।
  - घ. फूडकैम इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन, शंघाई, चीन।
  - ङ. यीजिंग झेनफेन मेडिकल कैमिकल कंपनी लि., ईझिंग सिटी, जियांगशू प्रोविन्स, चीन।
  - च. हेनान हुआरोंग कैमिकल कंपनी लि., हेनान हैके, चीन।
  - छ. लियानयुंगांग डोंगताई फूड इनग्रीडिएंस कंपनी लि. जिनपू जिला, जियांगशू, लियान युगांग, चीन
  - ज. लियानयुगांग शूरेन केचांग फूड एडिटिव कंपनी लि., जियांगशू, चीन।
  - झ. आरजैडीबीसी कंपनी लि., शेनडांग प्रोविंस, चीन।
  - ञ. लाइवू तैहे बायो कैमिस्ट्री कंपनी लि. शेनडांग प्रोविंस, चीन।
  - ट. आरजैडीबीसी (जुजियान) कंपनी लि., शेनडांग प्रोविंस, चीन।
  - ठ. वाईफेंग एनसिंग इंडस्ट्री कंपनी लि. शेनडांग प्रोविंस, चीन।
  - ड. यीजिंग यूनियन बायो कैमिकल कंपनी लि. जियांगशू प्रोविंस, चीन
  - ढ. डीएसएम सिट्रिक एसिड (बुक्शी) लि., जियांगशू प्रोविंस, चीन
  - ण. एंगुई बीबीसीए बायोकैमिकल कंपनी लि. एंगुई प्रोविंस, चीन
- (vii) संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है और न ही कोई विधिक अनुरोध दायर किया है।
- (viii) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं/प्रयोक्ता एसोसिएशनों (जिनके नाम और पते प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए थे) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें पत्र जारी होने की तारीख से चालीस दिन के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया :
- क. क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन प्रा. लि., दिल्ली
  - ख. डैस्मो एक्सपोर्टर्स, महाराष्ट्र।
  - ग. न्यू ड्रग एंड कैमिकल कंपनी, महाराष्ट्र।
  - घ. कलरकॉन एशिया प्रा. लि., महाराष्ट्र।
  - ङ. एसिड-इंडिया, मूलरात्रा, मुंबई।
  - च. प्रदीप कुमार शर्मा प्रा. लि., मुंबई।
  - छ. अमिजाल कैमिकल्स, मुंबई।
  - ज. अडानी फार्माकैम प्रा.लि., रोजकोट
  - झ. सुजाता कैमिकल्स, बड़ोदरा।

- ज. प्रकाश कैमिकल्स प्रा.लि., बड़ोदरा ।  
 ट. आर.एम. कैमिकल्स, चेन्नई ।  
 ठ. थाइजर लिमिटेड, मुंबई ।  
 ड. एफडीसी लि., औरंगाबाद ।  
 ढ. वालेंस फार्मास्यूटीकल लि., पणजी ।  
 ण. कैरा डिस्ट्रिक्ट को-ऑप मिलक प्रौड्यूसर्स यूनियन लि., आनंद, गुजरात ।  
 त. श्रायवर डायनामिक्स डेयरीज लि., बारामती, जिला पुणे ।  
 थ. वासा फर्माकैम प्रा. लि., अहमदाबाद ।

- (ix) केवल मै. न्यू ड्रग एंड कैमिकल कंपनी, मुंबई ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर दिया तथा विधिक अनुरोधों के साथ-साथ अयातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया । ।
- (x) वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1.10.2012 से 30.9.2013 तक की थी । क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ पूर्ववर्ती वर्षों अर्थात् 2010-11, 2011-12, 2012-13 और जांच अवधि के आंकड़ों पर विचार किया गया है ।
- (xi) वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था कि वह जांच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के हुए आयातों के व्यौरों की व्यवस्था करें और उक्त सूचना डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त हो गई थी जिसे इस जांच में अपनाया गया है ।
- (xii) जिन निर्यातकों, उत्पादकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्राधिकारी को न तो उत्तर दिया है और न ही इस जांच से संगत सूचना प्रस्तुत की है, उन्हें असहयोगी हितबद्ध पक्षकार माना गया है ।
- (xiii) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा ।
- (xiv) प्राधिकारी ने अनुबंध-III में निर्धारित दिशानिर्देशों के आधार पर संभव सीमा तक घरेलू उत्पादक द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच की है ताकि भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और क्षति रहित कीमत की गणना की जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- (xv) नियमों के अनुसार प्राधिकारी ने 6 जनवरी, 2015 को आयोजित मौखिक सुनवाई में मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को अवसर भी प्रदान किया । मौखिक सुनवाई में केवल घरेलू उद्योग ने भाग लिया । मै. न्यू ड्रग्स एंड कैमिकल कंपनी ने मौखिक सुनवाई में भाग नहीं लिया । तथापि, उन्होंने मौखिक सुनवाई से पूर्व लिखित अनुरोध दायर किया । जिन पक्षकारों ने मौखिक सुनवाई में भाग लिया था उनसे अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करें ।
- (xvi) जांच की कार्यवाही के दौरान घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए अनुरोधों की जांच की गई है और उन पर इस जांच में विचार किया गया है ।
- (xvii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सूचना और आंकड़ों का सत्यापन आवश्यक समझी गई सीमा तक किया गया था ।
- (xviii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की प्राधिकारी द्वारा जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के बारे में की गई थी । संतुष्ट होने के बाद प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन नहीं किया गया है । जहां संभव हुआ है, हितबद्ध पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था ।
- (xix) इस जांच में अनिवार्य तथ्यों वाला एक प्रकटन विवरण, जो अंतिम जांच परिणाम का आधार बन सकता था, दिनांक 12-2-2015 को हितबद्ध पक्षकारों को जारी किया गया था । केवल घरेलू उद्योग ने प्रकटन विवरण का उत्तर दिया और इस अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना में घरेलू उद्योग से प्राप्त प्रकटन विवरण पश्चात अनुरोधों पर संगत समझी गई सीमा तक विचार किया गया है ।
- (xx) जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर इन अनिवार्य तथ्यों को दर्ज किया है और ऐसे पक्षकारों को असहयोगी माना है ।

- (xxi) \*\*\*यह चिन्ह इस अंतिम जांच परिणाम में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने उसे नियमानुसार गोपनीय ही माना है।
- (xxii) जांच अवधि के लिए अपनाई गई भारित विनिमय दर 1 अम.डा. = 56.89 रूपए है।

**ख. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु**

**घरेलू उद्योग के विचार**

5. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

i. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "सोडियम साइट्रेट" है। सोडियम साइट्रेट एक रासायनिक यौगिक होता है जो मोनोसोडियम साइट्रेट, डाई सोडियम साइट्रेट और ट्राई सोडियम साइट्रेट के रूप में आता है। विचाराधीन उत्पाद का सौदा निम्नलिखित वैकल्पिक नामों से भी किया जा सकता है -

- क. सोडियम साइट्रेट
- ख. ट्राई सोडियम साइट्रेट
- ग. ट्राई सोडियम साइट्रेट डिहाइड्रेट
- घ. सोडियम साइट्रेट डिहाइड्रेट
- ड. ट्राई बेसिक सोडियम साइट्रेट
- च. सोडियम साइट्रेट ट्राई बेसिक डिहाइड्रेट
- छ. सोडियम साइट्रेट डाई बेसिक सेसक्विहाइड्रेट
- ज. सोडियम साइट्रेट मोनो बेसिक बायोएक्स्ट्रा

- II. सोडियम साइट्रेट का मुख्य रूप से उपयोग एक एक्सपैक्टोरेट तथा यूरिन अल्कानाइजर के रूप में किया जाता है। इसका उपयोग भेषजीय साधन तथा दुग्ध उद्योगों में खाद्य अभिवर्धक के रूप में भी किया जाता है जिससे मक्खन विनिर्माण तथा पेय पदार्थों के संघटकों की पूर्ति होती है। यह एक जल शोधन रसायन तथा प्रयोगशाला रिएजेंट भी है।
- III. याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तु भारत में आयातित वस्तु के समान वस्तु है। दोनों उत्पादों में भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण आदि जैसे मापदंडों के संबंध में तुलनीय विशेषताएं हैं।
- IV. घरेलू रूप से उत्पादित उत्पाद और आयातित उत्पाद के संबंध में अनिवार्य उत्पाद गुणधर्मों की तुलना से यह पता चलेगा कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु उत्पाद के आवश्यक गुणधर्मों के रूप में आयातित वस्तु से तुलनीय है।
- V. याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तु भेषज/खाद्य/कीटनाशक/सिरेमिक आदि जैसे सभी प्रकार के उद्योगों के लिए है। यह उत्पाद ऐसा है जिसे आगे संसाधित नहीं किया जा सकता। आयातक विनियमन एवं निषेध का उल्लंघन करने के लिए ही ऐसा दावा कर रहे हैं। चूंकि भेषज और खाद्य ग्रेड का आयात नहीं किया जा सकता इसलिए आयात "औषधी उपयोग हेतु नहीं" के नाम से किए जा रहे हैं।

**अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

6. मैसर्स न्यू ड्रग एंड कैमिकल कंपनी ने दावा किया है कि याचिकाकर्ता और समर्थनकर्ता सुनील कैमिकल्स द्वारा केवल भेषज तथा खाद्य उद्योगों की जरूरतों को पूरा करने और न कि कृषि रसायन, इलैक्ट्रो प्लेटिंग जैसे अन्य रसायन उद्योगों तथा अन्य रसायन उद्योगों आदि की जरूरतों को पूरा करने के लिए केवल भेषज ग्रेड का उत्पादन किया जाता है।

**प्राधिकारी द्वारा जांच**

7. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "सोडियम साइट्रेट" है। सोडियम साइट्रेट एक रासायनिक यौगिक होता है जो मोनोसोडियम साइट्रेट, डाई सोडियम साइट्रेट और ट्राई सोडियम साइट्रेट के रूप में आता है। यह साइट्रिक एसिड का सोडियम साल्ट है और इसका स्वाद तीखा एवं नमकीन होता है। सोडियम साइट्रेट का मुख्य रूप से उपयोग भेषज उद्योगों में एक्सपैक्टोरेट तथा यूरिन अल्कानाइजर के रूप में किया जाता है। इसका उपयोग भेषजीय साधन, दुग्ध उद्योगों में खाद्य अभिवर्धक, जलशोधन में प्रयोगशाला रीजेंट, पेय पदार्थों में एसिडिटी नियामक, मक्खन निर्माण के समय तेलों के लिए एक इमल्सीफायर तथा खाद्य आदि में एंटीऑक्सीडेंट के रूप में भी किया जाता है। विचाराधीन उत्पाद का सौदा निम्नलिखित वैकल्पिक नामों से भी किया जा सकता है -

- क. सोडियम साइट्रेट
- ख. ट्राई सोडियम साइट्रेट
- ग. ट्राई सोडियम साइट्रेट डिहाइड्रेट
- घ. सोडियम साइट्रेट डिहाइड्रेट
- ड. ट्राई बेसिक सोडियम साइट्रेट

- च. सोडियम साइट्रेट ट्राई बेसिक डिहाइड्रेट  
 छ. सोडियम साइट्रेट डाई बेसिक सेसक्विहाइड्रेट  
 ज. सोडियम साइट्रेट मोनो बेसिक बायोएक्स्ट्रा

8. सोडियम साइट्रेट सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय-29 में सीमाशुल्क उपशीर्ष 29181520 के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि, यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।
9. समान वस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नानुसार व्यवस्था है:-  
*“समान वस्तु” से ऐसी वस्तु अभिप्रेत है जो भारत में पाटने के कारण जांच के अंतर्गत वस्तु के सभी प्रकार से समरूप या समान है अथवा ऐसी वस्तु के न होने पर अन्य वस्तु जोकि यद्यपि सभी प्रकार से समनुरूप नहीं है परंतु जांचाधीन वस्तुओं के अत्यधिक सदृश विशेषताएं रखती हैं;*
10. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन और वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के रूप में तुलनीय है। उपभोक्ता दोनों का अदल-बदल कर उपयोग कर रहे हैं।
11. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग केवल भेषज ग्रेड हेतु सोडियम साइट्रेट का उत्पादन करता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तर्क की पुष्टि नहीं की गई है। रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य से आगे यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने भेषज और खाद्य उद्योगों से इतर फोटोग्राफिक, कृषि एवं रसायन उद्योग जैसे विभिन्न खंडों के लिए उत्पाद का उत्पादन किया है और उसकी बिक्री की है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु का उपयोग भेषज/खाद्य/कीटनाशक आदि जैसे सभी प्रकार के उद्योगों में किया जाता है।

#### ग. घरेलू उद्योग और उसका आधार

##### घरेलू उद्योग के विचार

12. घरेलू उद्योग और उसके आधार के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नानुसार हैं:-
- क. वर्तमान आवेदन मै. पोजी फार्मा कैम प्रा. लि. द्वारा दायर किया गया है। आवेदन का समर्थन सुनील कैमिकल्स द्वारा किया गया था। ऐसे चार अन्य उत्पादक हैं जिनके बारे में यह माना जाता है कि उन्होंने भारत में संबद्ध उत्पाद का उत्पादन करने की क्षमता सृजित कर ली है, ये हैं अमीजाल कैमिकल्स, सुजाता कैमिकल्स, वासा फार्मा कैम. प्रा. लि. और अडानी फार्मा कैम. प्रा.लि.।
- ख. याचिकाकर्ता की बाजार आसूचना के अनुसार वासा फार्मा, अडानी फार्मा और सुजाता कैमिकल्स द्वारा पूर्व में संबद्ध उत्पाद का उत्पादन किया जा रहा था। तथापि, सतत पाटन के कारण उन्होंने आयात करना शुरू कर दिया है और आयातित उत्पाद का व्यापार प्रारंभ कर दिया है। याचिकाकर्ता की सूचना के अनुसार इन कंपनियों के बारे में यह पता नहीं चला है कि उन्होंने समूची क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन किया है। अमीजाल कैमिकल्स के बारे में यह माना जाता है कि उसने संबद्ध वस्तु का उत्पादन और आयात किया है।
- ग. इसके अलावा, ईशिता ड्रग्स एंड इंडस्ट्रीज लि., नवनिधि फार्मा लैब, जी एमफ्रे लेबोरेटरीज, वांग फार्मास्यूटीकल्स एंड कैमिकल्स तथा वीएम कैमिकल्स ऐसी कंपनियां हैं जिनके द्वारा बाजार में विचाराधीन उत्पाद की बिक्री की जा रही है। तथापि, याचिकाकर्ता को इस बात की जानकारी नहीं है कि क्या ये कंपनियां आयातित उत्पाद की बिक्री कर रही हैं अथवा उनके पास कुछ विनिर्माण संबंधी प्रचालन हैं। याचिकाकर्ता ने उनकी ज्ञात बिक्री मात्रा पर विचार किया है और उसे उत्पादन माना है। अनुरोध है कि याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है।
- घ. मै. ईशिता ड्रग्स एंड इंडस्ट्रीज लि. ने की गई रक्षोपाय जांच में भाग लिया था और यह स्वीकार किया था कि उनके द्वारा पूर्व में संबद्ध वस्तु का उत्पादन किया जा रहा था और बाद में उसने संबद्ध वस्तु का आयात किया है और उसकी बिक्री की है।

##### अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

13. घरेलू उद्योग और उसके आधार के बारे में हितबद्ध पक्षकारों ने कोई अनुरोध नहीं किया है।

##### प्राधिकारी द्वारा जांच

14. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है:-  
*“घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए*

उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में 'घरेलू उद्योग' पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।"

15. यह आवेदन विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उद्योग के रूप में मै. पोर्जी फार्मा कैम. प्रा. लि. द्वारा दायर किया गया है। मै. सुनील कैमिकल्स ने आवेदन का समर्थन किया है। याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि ऐसी विभिन्न अन्य कंपनियां हैं जिनके पास विचाराधीन उत्पाद की निर्मित क्षमताएं हैं परंतु उन्होंने अब उत्पाद का व्यापार शुरू कर दिया है और वे घरेलू बाजार में उत्पाद की बिक्री कर रहे हैं। तथापि, चूंकि इन कंपनियों की वास्तविक स्थिति की जानकारी याचिकाकर्ता को नहीं है, इसलिए उनकी जात बिक्रियों को उत्पादन माना गया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार आवेदक का उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है। अतः यह निर्धारित किया जाता है कि यह आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से किया गया है और आवेदन में पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत 'आधार' संबंधी अपेक्षाओं की पूर्ति होती है। अतः याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अनुसार 'घरेलू उद्योग' है।

#### **पाटन का निर्धारण-कार्य प्रणाली एवं मापदंड**

##### **घ. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन**

##### **चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य**

##### **चीन जन.गण. के सभी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए एमईटी जांच तथा सामान्य मूल्य**

16. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों में डब्ल्यूटीओ के अन्य सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) के अनुसार चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाना है जो नियमों के अनुसार निर्यातक देश अथवा अलग-अलग निर्यातकों द्वारा उक्त अनुमान के खंडन के अधीन है।
17. पाटनरोधी नियमावली के पैरा-8, अनुबंध-1 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन का निर्यातक पैरा 8 के उप-पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करता है और इसके प्रतिकूल सिद्ध करता है। चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप-पैरा (3) में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-
  - क. कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;
  - ख. इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बड़े-खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन है;
  - ग. इस प्रकार की फर्मों दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
  - घ. विनिमय दर का परिवर्तन व्याज की दर पर किया जाता है।
18. यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा जारी की गई जांच शुरुआत संबंधी सूचना के बाद चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने अपनी प्रश्नावली का उत्तर और बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है और किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान के खंडन की मांग नहीं की है।

##### **घरेलू उद्योग के विचार**

19. घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नानुसार उल्लेख करते हुए यह तर्क दिया है कि चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाना चाहिए।

- क. **बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा उस स्थिति में प्रदान नहीं किया जा सकता, जिसमें प्रमुख शेयरधारकों में से एक शेयरधारक राज्य की स्वामित्व वाली/नियंत्रित कंपनी है। निर्दिष्ट प्राधिकारी और यूरोपीय आयोग ने निरंतर यह माना है कि ऐसे मामलों में राज्य के हस्तक्षेप की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। यह माना गया है कि यह न केवल विगत हस्तक्षेपों का प्रश्न है, अपितु बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान करने के लिए संगत पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भविष्य में राज्य के हस्तक्षेप की संभावना का भी प्रश्न है।**

- ख. **बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि चीन के प्रतिवादी निर्यातक यह सिद्ध नहीं करते हैं कि प्रमुख निविष्टियों की कीमतों में बाजार मूल्यों का पर्याप्त प्रदर्शन होता है—**‘बाजार मूल्यों पर्याप्त प्रदर्शन’ की व्यापक व्याख्या की गई है ताकि यह अर्थ निकाला जा सके कि इन निविष्टियों की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कीमतों से तुलनीय होनी चाहिए। यह तथ्य नितान्त अपर्याप्त है कि ऐसी कीमतें चीन, जन.गण. में प्रचलित कीमत से तुलनीय है।
- ग. **बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि प्रतिवादी निर्यातक यह सिद्ध नहीं करता है कि उनकी बहियों की लेखा परीक्षा अंतर्राष्ट्रीय लेखा मानकों के अनुरूप की जाती है—**ऐसी स्थितियों में बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार को खारिज किया जाना चाहिए जिनमें चीन के निर्यातक यह सिद्ध करने में असमर्थ रहे हैं कि उनकी बहियां अंतर्राष्ट्रीय लेखा मानकों (आई ए एस) के अनुरूप हैं। अंतर्राष्ट्रीय लेखा मानकों के अनुपालन पर जोर देने की जरूरत वार्षिक रिपोर्ट में उल्लिखित राजस्व एवं व्यय, परिसंपत्तियों और देयताओं की सत्यता और यथातथ्यता सुनिश्चित करने के लिए है।
- घ. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा उस स्थिति में प्रदान नहीं किया जा सकता यदि एक भी मापदंड की पूर्ति होती है : बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि चीन के प्रतिवादी निर्यातक नियमावली के निर्धारित प्रत्येक मापदंड के संबंध में जांच पर खरे नहीं उतरते हैं। यह स्थिति वास्तविक क्षति के लिए अपेक्षित जांच के ठीक विपरीत है। यह एक विधिवत स्वीकार की गई स्थिति है कि क्षति का सकारात्मक जांच परिणाम उस स्थिति में भी दर्ज किया जा सकता है जब तक एक ही मापदंड से क्षति की पुष्टि होती हो। इस प्रकार जहां क्षति की मौजूदगी की पुष्टि करने के लिए एक मापदंड पर्याप्त है, वहीं बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के दावे को रद्द करने के लिए एक ही मापदंड पर खरे उतरने में विफलता पर्याप्त है।
- ड. **सिद्ध करने का भार/दायित्व—**यह सिद्ध करने का दायित्व प्राधिकारी पर नहीं है कि चीन की कंपनियां वास्तव में बाजार अर्थव्यवस्था के वातावरण में प्रचालन कर रही हैं और वह बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार की हकदार हैं। इसके विपरीत यह सिद्ध करना चीन के प्रतिवादी निर्यातकों का दायित्व है कि वे बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों में प्रचालन कर रही हैं।
- च. **समग्र रूप में समूह का उत्तर—**बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक प्रतिवादी कंपनी और उसका समूह समग्र रूप में इसका दावा नहीं करते हैं। यदि उक्त समूह के भागस्वरूप एक या अधिक कंपनियों ने उत्तर दायर नहीं किया है तो बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे को अस्वीकृत किया जाना चाहिए।
- छ. **रूपांतरण :** ऐसी स्थिति जिसमें वर्तमान शेयरधारकों ने स्वयं उत्पादन सुविधाएं स्थापित नहीं की हैं, परंतु किसी अन्य पक्षकार ने इन्हें अर्जित किया है, बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि रूपांतरण की प्रक्रिया पूर्णतः पुष्टि दस्तावेजी साक्ष्य के लिए नहीं की जाती है।

#### **प्राधिकारी द्वारा चीन जन.गण. में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य की जांच और उसका निर्धारण**

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों में डब्ल्यूटीओ के अन्य सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है जो पाटनरोधी नियमों के अनुसार निर्यातक देश अथवा अलग-अलग निर्यातकों द्वारा उक्त अनुमान के खंडन के अधीन है।
21. पाटनरोधी नियमावली के पैरा-8, के अनुबंध-क के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन का निर्यातक पैरा 8 के उप-पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करता है और इसके प्रतिकूल सिद्ध करता है। चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप-पैरा (3) में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित मानदंडों पर विचार किया जा सके कि क्या :-
- कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;

- इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बट्टे खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन है;
- इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- विनिमय दर का परिवर्तन व्याज की दर पर किया जाता है।

22. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा जारी की गई जांच शुरुआत संबंधी सूचना के बाद चीन के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली के उत्तर सहित प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं और गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान के खंडन की मांग नहीं की है। चूंकि चीन की किसी भी कंपनी ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा नहीं किया है इसलिए प्राधिकारी ने यह निर्धारित नहीं किया है कि क्या चीन के किसी उत्पादक को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जा सकता है।

### **चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण**

23. चूंकि चीन के किसी उत्पादक और निर्यातक ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य का अनुमान लगाया है।

24. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 में उपबंध है कि:

"गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्वित रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिनमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो, उचित समय सीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।"

25. इस बात पर विचार करते हुए कि चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु के किसी निर्यातक/उत्पादक का कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है और आगे यह नोट करते हुए कि चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे उचित देश के बारे में सूचना/आंकड़े रिकॉर्ड में उपलब्ध नहीं हैं, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के दूसरे परंतुक के अनुसार उपलब्ध "उचित आधार" पर चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद के कारखाना सामान्य मूल्य का निर्धारण विधिवत समायोजित उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर किया गया है।

26. अतः प्राधिकारी ने बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा लाभ सहित विधिवत समायोजित भारत में उत्पादन लागत के आधार पर तथा प्रमुख कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर विचार करते हुए चीन जन.गण. हेतु सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। तदनुसार, चीन के निर्यातकों के लिए इस प्रकार निर्धारित परिकलित सामान्य मूल्य नीचे दी गई पाटन मार्जिन संबंधी तालिका के

अनुसार है।

### **निर्यात कीमत**

27. चूंकि किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने ऐसी कोई सूचना प्रदान नहीं की है जिसका प्रयोग निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु किया जा सकता है इसलिए प्राधिकारी ने भारत में हुए आयातों के आधार पर चीन जन.गण. के सभी निर्यातकों के लिए "निर्यात कीमत" निर्धारित की है। निवल निर्यात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस से प्राप्त सौदेवार आयात आंकड़ों को हिसाब में लिया है। चीन के उत्पादकों के असहयोग को ध्यान में रखते हुए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर कीमत समायोजनों की अनुमति दी गई है। तदनुसार, निर्यात कीमत में समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, पत्तन व्यय, बैंक प्रभार, अंतरदेशीय भाड़े, वैट अंतर आदि हेतु समायोजन किया गया है। प्राधिकारी द्वारा निकाली गई निवल निर्यात कीमत नीचे दी गई पाटन मार्जिन संबंधी तालिका के अनुसार है।

### **पाटन मार्जिन**

28. ऊपर यथानिर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नलिखित तालिका के अनुसार किया गया है।



**पाटन मार्जिन तालिका**

विवरण	अम.डॉ./मी.ट.	रू./मी.ट.
परिकलित सामान्य मूल्य	***	***
निर्यात कीमत	***	***
पाटन मार्जिन	***	***
पाटन मार्जिन %	***	***
रेंज %	50-70	50-70

**ड. क्षति निर्धारण और कारणात्मक संबंध****घरेलू उद्योग के विचार**

29. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नानुसार है:-

- अमरीका, ईसी और ब्राजील द्वारा संबद्ध देश पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है। चीन द्वारा उत्पाद के वैश्विक पाटन का कारण चीन में मौजूद मांग-आपूर्ति के भारी अंतर का है।
- जांच अवधि में संबद्ध देश से आयात की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। संबद्ध आयात जांच अवधि में घरेलू बाजार में हुए कुल आयातों के लगभग 96 प्रतिशत बनते हैं। संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। संबद्ध आयातों ने भारतीय बाजार के लगभग 60 प्रतिशत को कब्जे में ले लिया है।
- उत्पादन और मांग की तुलना में आयात काफी अधिक हैं और इतने उच्च हिस्से के बावजूद उनमें वृद्धि हुई है।
- समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रही है जिससे कीमत में भारी कटौती हुई है।
- क्षति अवधि के दौरान आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और बिक्री कीमत से काफी कम रही है। कम कीमत पर हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग बिक्री लागत के स्तर से कम कीमत पर अपनी बिक्री कीमत को बनाए रखने के लिए बाध्य हुआ है। अतः आयातों की वजह से क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमत का ह्रास हो रहा है।
- आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत में ह्रास हो रहा है। इसे इस तथ्य से देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग उस स्थिति में उस कीमत पर बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ है जब उसे भारी वित्तीय घाटा हो रहा है और इस प्रकार उसे क्षति हुई है।
- भारत में पर्याप्त मांग को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2012-13 में घरेलू उद्योग की क्षमता में वृद्धि हुई। यद्यपि, उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। तथापि, वह भारत में मांग के स्तर से नीचे रहा है। घरेलू उद्योग की बिक्री में जांच अवधि के दौरान कुछ गिरावट के साथ क्षति अवधि में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग मात्रात्मक संबंधी मापदंडों में कुछ सुधार प्रदर्शित करने में समर्थ हुआ है। तथापि, घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा हुआ है। इसके अलावा, ऐसी स्थिति में, जहां मांग क्षमताओं से अधिक है, वहां घरेलू उद्योग से उचित लाभ हासिल करने की आशा की जाती है।
- वित्तीय घाटे से घरेलू उद्योग लड़खड़ा रहा है। समूची क्षति अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी पर पर आय नकारात्मक रही है। घरेलू उद्योग के घाटे में क्षति अवधि के दौरान ही वृद्धि हुई है। समूची क्षति अवधि के दौरान हुआ वित्तीय घाटा विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण हुआ है।
- लाभ, नकद लाभ और लगाई गई पूंजी पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है जबकि उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से के संबंध में उसका निष्पादन प्रतिकूल रहा है।
- क्षमताओं में वृद्धि, देश में पर्याप्त मांग की मौजूदगी और प्रस्तावित ऐसी कम कीमतों के बावजूद घरेलू उद्योग अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने में समर्थ नहीं रहा है।
- घरेलू उद्योग द्वारा घाटे पर बिक्री करने के प्रयासों के बावजूद समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूची जमा रहा हो रही है।

**आयातकों/उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

30. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

- हमारी राय यह है कि सोडियम साइट्रेट पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए क्योंकि सभी आयातक "औषधी उपयोग के लिए नहीं" रूप में सोडियम साइट्रेट का आयात कर रहे हैं। इस प्रकार इससे भारतीय विनिर्माता के कारोबार पर प्रभाव नहीं पड़ रहा है।
- पोजी फार्मा केम और सुनील कैमिकल्स द्वारा केवल भेषज ग्रेड के सोडियम साइट्रेट आईपी का उत्पादन किया जा रहा है। इसलिए, वे केवल भेषज और खाद्य उद्योगों की जरूरतों की पूर्ति कर रहे हैं न कि अन्य रासायनिक उद्योगों की जबकि

हमारे सभी उत्पादक "औषधी उपयोग के लिए नहीं" के रूप में सोडियम साइट्रेट का आयात कर रहे हैं। अतः ये आयातक औषध तथा कृषि रसायन, इलेक्ट्रिक प्लेटिंग जैसे खाद्य उद्योगों और अन्य रसायन उद्योगों से इतर कंपनियों की जरूरतों के पूरा कर रहे हैं।

- (ग) इसके अलावा, रोजी फार्मा कैम प्रा.लि. और सुनील कैमिकल्स के अलावा कई अन्य विनिर्माता सोडियम साइट्रेट आईपी का उत्पादन कर रहे हैं, जो हैं अमीजाल कैमिकल्स, वासा फार्मा, देवेन्द्र कीर्ति फार्मा कैम प्रा. लि. और अडानी फार्मा कैम प्रा.लि.। ये सभी भेषज तथा खाद्य उद्योगों से इतर उद्योगों के लिए सोडियम साइट्रेट का विनिर्माण करते हैं। अतः यदि हम इन पर शुल्क लगाते हैं तो भेषज तथा रसायन से संबद्ध उद्योगों जैसे खाद्य उद्योगों को नुकसान हो सकता है।
- (घ) चीन द्वारा फर्मेंटेशन प्रक्रिया के जरिए सोडियम साइट्रेट का उत्पादन किया जा रहा है और भारत में हम साइट्रिक एसिड का आयात करते हैं और इसे सोडियम साइट्रेट का विनिर्माण करने के लिए कास्टिक सोडा के साथ मिश्रित करते हैं। इस प्रकार हम साइट्रिक एसिड के लिए चीन पर निर्भर हैं। यदि हम सोडियम साइट्रेट पर पाटनरोधी शुल्क लगाते हैं तो चीन के विनिर्माता भविष्य में साइट्रिक एसिड की दर में वृद्धि कर सकते हैं।

### **प्राधिकारी द्वारा जांच**

31. विरोधी हितबद्ध पक्षकारों ने अनिवार्यतः यह दावा किया है कि कोजी फार्मा कैम और सुनील कैमिकल्स द्वारा केवल औषध ग्रेड के सोडियम साइट्रेट आईपी का ही उत्पादन किया जा रहा है और इस प्रकार वे केवल औषध एवं खाद्य उद्योगों की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं न कि कृषि रसायन, इलेक्ट्रो प्लेटिंग और अन्य रासायनिक उद्योगों की जरूरतों का, जबकि सभी आयातक औषध एवं कृषि रसायन, इलेक्ट्रो प्लेटिंग जैसे खाद्य उद्योगों और अन्य रसायन उद्योगों से इतर उद्योगों में प्रयोग किए जाने वाले "औषधीय उपयोग हेतु नहीं" रूप में सोडियम साइट्रेट का आयात कर रहे हैं तथा भारत में सोडियम साइट्रेट के अन्य विनिर्माता भी ऐसी भारतीय कंपनियों के लिए सोडियम साइट्रेट का विनिर्माण कर रहे हैं जो भेषज और कृषि रसायन, इलेक्ट्रो प्लेटिंग एवं अन्य रसायन उद्योगों जैसे खाद्य उद्योगों के लिए संबद्ध वस्तु का उपयोग कर रही हैं। प्राधिकारी ने इस पहलू की जांच की है और यह नोट किया है कि विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस तर्क की पुष्टि किसी दस्तावेजी साक्ष्य से नहीं की गई है। तथापि, दूसरी ओर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजी साक्ष्य से यह नोट किया जाता है कि उन्होंने औषध एवं फोटोग्राफिक, कृषि तथा रसायन उद्योग जैसे खाद्य उद्योगों के अलावा विभिन्न खंडों को संबद्ध वस्तु की बिक्री की है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु का उपयोग भेषज/खाद्य/कृषि/फोटोग्राफिक तथा अन्य रसायन उद्योगों जैसे सभी प्रकार के उद्योगों में किया जाता है।
32. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में किसी क्षति के निर्धारण में यह उपबंध है कि किसी क्षति जांच में "... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए ..." ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से की कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।"
33. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव, एवं (ख) ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच का प्रावधान है। जहां तक पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक कि पाटित के कीमत प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे उत्पादों के प्रभाव से कीमत में काफी अधिक मात्रा में अन्यथा गिरावट आई है अथवा होने वाली इस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा काफी अधिक स्तर तक बढ़ गई होती।
34. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (IV) में निम्नानुसार उल्लेख है:

*"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"*

35. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II (iv) के अनुसार उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि जैसे घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों पर विचार किया है।

#### मांग और बाजार हिस्सा

36. संबद्ध वस्तु की घरेलू खपत/मांग के निर्धारण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग तथा अन्य भारतीय उत्पादों की बिक्री मात्रा को भारत में हुए कुल आयातों में जोड़ा गया है जिसका सारांश निम्नानुसार है :-

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	607	1319	1229	1191
समर्थनकर्ता कंपनी की बिक्री	मी.ट.	1,221	1,462	1,452	1,375
अन्य उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	233	307	335	234
संबद्ध देश-आयात	मी.ट.	2,578	2,666	3,526	3,774
अन्य देश-आयात	मी.ट.	39	174	193	170
कुल मांग-खपत	मी.ट.	4678	5928	6736	6744

37. यह नोट किया जाता है कि समूची क्षति अवधि के दौरान मांग में सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

#### च. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

आयात मात्रा और बाजार हिस्सा

38. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में अथवा भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त सौदेवार आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है। संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:—

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
आयात		2,617	2,840	3,719	3,945
संबद्ध देश	मी.ट.	2,578	2,666	3,526	3,774
अन्य देश	मी.ट.	39	174	193	170
आयातों में बाजार हिस्सा					
संबद्ध देश	%	98.5%	93.9%	94.8%	95.7%
अन्य देश	%	1.5%	6.1%	5.2%	4.3%
मांग में बाजार हिस्सा					
संबद्ध देश के आयात	%	56.3%	50.9%	53.9%	57.5%
अन्य देश के आयात	%	0.8%	3.3%	3.0%	2.6%
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	13%	22%	18%	18%
समर्थनकर्ता की बिक्री	%	26%	25%	22%	20%
घरेलू उद्योग एवं समर्थनकर्ता	%	39%	47%	40%	38%
अन्य भारतीय उत्पादक	%	5.1%	5.9%	5.1%	3.6%
योग	%	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%
निम्नलिखित के संबंध में चीन जन.गण. से हुए आयात					
भारतीय उत्पादन	%	97.07%	89.43%	105.97%	117.29%
भारत में खपत	%	56.3%	50.9%	53.9%	57.5%

39. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि में संबद्ध देश संबद्ध वस्तु के आयात में भारी वृद्धि हुई है। अधिकांश आयात संबद्ध देश से हुए हैं। संबद्ध देश के आयात कुल आयातों के 95 प्रतिशत बनते हैं। इसके अलावा, संबद्ध देश

से हुए आयातों में भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में भी वृद्धि हुई है और ये काफी अधिक है। इस प्रकार, संबद्ध देश से आयातों में समग्र रूप में तथा तुलनात्मक रूप में हुई भारी वृद्धि का स्पष्ट साक्ष्य है।

#### छ. आयातों का कीमत प्रभाव

40. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों के कारण भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें कीमत में होने वाली वृद्धि में काफी स्तर तक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में अत्यधिक रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी उच्च स्तर तक वृद्धि हो गई होती। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है।

#### कीमत कटौती

41. इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में आयातों के कारण कटौती हुई है, प्राधिकारी ने आयातों की पहुंच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की निबल बिक्री प्राप्ति के साथ की है।

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
निबल बिक्री प्राप्ति	रू./मी.ट.	***	***	***	***
आयातों की पहुंच कीमत	रू./मी.ट.	43,346	50,706	50,540	50,308
कीमत कटौती	रू./मी.ट.	***	***	***	***
कीमत कटौती (%)	%	***	***	***	***
कीमत कटौती (%)	% रेंज	15-25	20-30	15-25	15-25

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम रही थी जिससे संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों के कारण कीमत में हुई भारी कटौती का पता चलता है।

#### कम कीमत पर बिक्री

43. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई कम कीमत पर बिक्री संबंधी क्षति की जांच भी निम्नानुसार की है :-

देश/निर्यातक	इकाई	चीन जन.गण.
क्षति रहित कीमत	रू./मी.ट.	***
पहुंच कीमत	रू./मी.ट.	50,308
कम कीमत पर बिक्री	रू./मी.ट.	***
कम कीमत पर बिक्री %	%	***
कम कीमत पर बिक्री %	% रेंज	30-50

44. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के हुए आयातों के कारण जांच अवधि के दौरान अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री का नुकसान उठाना पड़ा है।

#### कीमत ह्रास और न्यूनीकरण

45. इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू कीमतों में ह्रास या न्यूनीकरण हो रहा है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमतों में अत्यधिक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागत और कीमत में हुए परिवर्तनों पर विचार किया है। निम्नलिखित तालिका से वास्तविक स्थिति का पता चलता है :—

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
आयातों की पहुंच कीमत	रू./मी.ट.	43,346	50,706	50,540	50,308
बिक्री की लागत	रू./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	127	120	113
बिक्री कीमत	रू./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	124	114	117

46. यह नोट किया जाता है कि आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और बिक्री कीमत के स्तर से कम रही है। इसके अलावा, यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत में 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में केवल 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अतः क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण कीमत ह्रास हुआ है और घरेलू उद्योग अपनी बिक्री लागत से कम कीमत पर वस्तु की बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ है।

#### ज. घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

47. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा।

48. घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों पर नीचे चर्चा की गई है :—

#### I. घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग

49. घरेलू उद्योग के उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग का उल्लेख निम्नानुसार किया गया है :—

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
क्षमता	मी.ट.	2,700	2,700	2,725	3,025
उत्पादन	मी.ट.	1,285	1,357	1,727	1,792
क्षमता उपयोग	%	47.58%	50.26%	63.93%	59.24%
घरेलू बिक्री मात्रा	मी.ट.	607	1,319	1,229	1,191

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि देश में मांग में हुई वृद्धि के मद्देनजर वर्तमान क्षति अवधि के भीतर घरेलू उद्योग की क्षमता में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि यद्यपि, उत्पादन में भी वृद्धि हुई है तथापि, वह भारत में मांग के स्तर से काफी कम रहा है।

51. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि पूर्ववर्ती वर्ष से जांच अवधि में आई कुछ गिरावट के साथ क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और घरेलू उद्योग की बिक्री में भी वृद्धि हुई है। जांच अवधि में कुछ गिरावट के साथ क्षमता उपयोग बढ़ा है।

#### II. बाजार हिस्सा

52. घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री और बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभावों की जांच निम्नानुसार की गई है :—

मांग में बाजार हिस्सा	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	13%	22%	18%	18%
घरेलू उद्योग और समर्थनकर्ता की बिक्री	%	39%	47%	40%	38%
अन्य उत्पादकों की बिक्री	%	5%	5%	5%	3%
संबद्ध देश- आयातक	%	55%	45%	52%	56%
अन्य देश-आयातक	%	1%	3%	3%	3%
कुल	%	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%

53. यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है परंतु पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में गिरावट आई है। मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा बढ़ा है। घरेलू बाजार का अधिकांश हिस्सा संबद्ध देश द्वारा धारित है।

### III. लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह

54. घरेलू उद्योग की बिक्री लागत, बिक्री कीमत और लाभ/हानि का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :-

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रू./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	127	120	113
बिक्री कीमत	रू./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	124	114	117
लाभ/हानि	रू./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100.00	-138	-139	-98
लाभ/हानि	लाख रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100.00	-300	-281	-191
पीबीआईटी	लाख रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100.00	-302	-281	-189
नकद लाभ	लाख रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100.00	-305	-279	-188
आरओआई	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	रेंज	-100.00	-178	-209	-90

55. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री लागत के स्तर से नीचे रही है। क्षति अवधि के दौरान बिक्री कीमत और बिक्री लागत के बीच अंतर में बढ़ोत्तरी हुई है। परिणामतः समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को घाटा हुआ है और जांच अवधि में उक्त घाटे में आगे और वृद्धि हुई है। इसी प्रकार निवेश पर आय और नकद लाभ नकारात्मक रहे हैं।

### IV. मालसूची

56. संबद्ध वस्तु की मालसूची से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित तालिका में दर्शाए गए हैं:-

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
अथ स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
इति स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
औसत स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	213	296	492

57. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि समूची क्षति अवधि के दौरान औसत स्टॉक में वृद्धि हुई है जबकि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में भारी वृद्धि हुई है।

#### V. रोजगार एवं मजदूरी

58. रोजगार एवं मजदूरी से संबंधित स्थिति निम्नानुसार है :-

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	181	198	196
मजदूरी	लाख रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	127	153	196

59. यह देखा जाता है कि इस अवधि में रोजगार और मजदूरी दोनों में वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

#### VI. उत्पादकता

60. उत्पादकता से संबंधित आंकड़ों से निम्नानुसार पता चलता है :-

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
प्रति दिन उत्पादकता	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	129	136

61. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन में घट-बढ़ के अनुरूप जांच अवधि में प्रति दिन उत्पादन के संबंध में उत्पादकता बढ़ी है।

#### VII. पाटन की मात्रा

62. जिस सीमा तक पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है, उस सीमा के एक संकेतक के रूप में पाटन की मात्रा से यह पता चलता है कि संबद्ध देश के खिलाफ निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक और काफी ज्यादा है।

#### VIII. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

63. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की ऐसी कार्य स्थिति जिसमें उत्पाद पिछले कई वर्षों से लगातार निष्पादन नहीं कर रहा है, के कारण भारी मात्रा में नया निवेश करना कठिन होगा।

#### IX. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

64. संबद्ध देश से आयात कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकने वाले पाटित आयातों से इतर कारकों पर विचार करने से यह पता चलता है कि संबद्ध देश से आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत, बिक्री लागत और क्षति रहित कीमत से काफी कम है जिससे भारतीय बाजार में अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव पड़ रहा है। यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का भारी मात्रा में कोई आयात नहीं हुआ है और इस उत्पाद का कोई व्यवहार्य स्थानापन्न नहीं है। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पाद की मांग में वृद्धि प्रदर्शित हो रही है और यह घरेलू उद्योग के कीमत ह्रास के लिए जिम्मेवार कारक नहीं रहा है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि घरेलू उद्योग की कीमत के लिए जिम्मेवार एकमात्र कारक संबद्ध देश से उत्पाद की आयात कीमत और घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत रही है। जैसा कि सूचना से पता चलता है यद्यपि, उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है तथापि, आयात कीमतें घरेलू उद्योग की लागत से काफी कम रही हैं जिससे घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की कीमत में ह्रास हुआ है। इस प्रकारा संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की कीमत को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है।

#### X. वृद्धि

65. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की आयात मात्रा में भारी वृद्धि हुई है। बिक्री और उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक रही थी। इसी प्रकार लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि भी नकारात्मक रही थी।

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
उत्पादन	%	-	6%	27%	4%
घरेलू बिक्री मात्रा	%	-	117%	-7%	-3%
बिक्री लागत	%	-	27%	-6%	-6%
बिक्री कीमत	%	-	24%	-8%	3%

#### झ. वास्तविक क्षति के बारे में निष्कर्ष

66. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के मात्रात्मक और कीमत प्रभावों तथा घरेलू उद्योग पर उसके प्रभाव की जांच करने के बाद यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों में समग्र रूप में और भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन तथा खपत की तुलना में भी भारी वृद्धि हुई है। बिक्री, उत्पादन और क्षमता उपयोग जैसे अन्य मात्रात्मक मापदंडों में यद्यपि, क्षति अवधि के दौरान वृद्धि का पता चलता है। तथापि, वे ईष्टतम स्तर से कम रहे हैं। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। इस प्रकार, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के हुए पाटित आयातों के कारण अत्यधिक मात्रात्मक क्षति हुई है। इसके अलावा, जहां तक संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण पड़े कीमत प्रभाव का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों की वजह से घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती हो रही है। घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के आयातों के कारण कीमत ह्रास का सामना करना पड़ा है क्योंकि संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में बढ़ोतरी नहीं की जा सकी। जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री, बाजार हिस्से, लाभ, नकद प्रवाह, निवेश पर आय, उत्पादकता और मालसूची के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है। लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह में आई गिरावट काफी अधिक तथा वास्तविक है। इस प्रकार प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

#### ड. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

67. वास्तविक क्षति, कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत ह्रास तथा कीमत न्यूनीकरण के संबंध में घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के मात्रात्मक और कीमत प्रभावों की जांच करने के बाद प्राधिकारी द्वारा भारतीय नियमों तथा पाटनरोधी करार में सूचीबद्ध अन्य सांकेतिक मापदंडों की जांच की गई है ताकि यह देखा जा सके कि क्या पाटित आयातों से इतर अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

#### (क) तीसरे देशों से आयातों की मात्रा और कीमत

68. यह नोट किया जाता है कि अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात उच्चतर कीमतों पर हुए हैं अथवा वे मात्रा के रूप में नगण्य हैं।

#### (ख) मांग में कमी और खपत की पद्धति में परिवर्तन

69. समूची क्षति अवधि के दौरान संबद्ध उत्पाद की मांग में सतत वृद्धि हुई है। मांग में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संभावित कारण नहीं है।

#### (ग) प्रौद्योगिकी विकास :

70. संबद्ध उत्पाद की उत्पादन प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस प्रकार प्रौद्योगिकी विकास घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारक नहीं है।

#### (घ) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

71. ऐसा कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

#### (ङ.) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन

72. प्राधिकारी द्वारा जांच की गई क्षति संबंधी सूचना घरेलू प्रचालनों के लिए है और इसलिए निर्यात मात्रा में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं रहा है।

#### (च) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

73. यह नोट किया जाता है कि क्षति के दौरान प्रतिदिन उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है।



74. इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि सूचीबद्ध अन्य ज्ञात कारकों से यह पता नहीं चलता है कि घरेलू उद्योग को इन अन्य कारकों की वजह से क्षति हो सकती है। प्राधिकारी ने इस बात की जांच की है कि क्या उत्पाद के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। निम्नलिखित मापदंडों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है।

- क. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती हो रही थी। परिणामतः घरेलू उद्योग अपनी कीमतों में अत्यधिक कटौती करने के लिए बाध्य हुआ था। घरेलू उद्योग द्वारा कीमत में किया गया ह्रास मुख्यतः देश में उत्पाद के पाटन के कारण हुआ था।
- ख. घरेलू उद्योग उत्पादन लागत से भी कम अपनी कीमत को घटाने के लिए बाध्य हुआ था जिसकी वजह से वित्तीय घाटा हुआ। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हुए वित्तीय घाटे में और अधिक वृद्धि हुई है।
- ग. लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय के संबंध में कीमत ह्रास की वजह से घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई। इस प्रकार उत्पाद के पाटन की वजह से लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है।

75. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

#### ठ. क्षति मार्जिन की मात्रा

##### क्षति मार्जिन

76. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की इस प्रकार से निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध देश से हुए आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। इस प्रकार निर्धारित क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:—

मापदंड	चीन जन.गण.	
	रु./मी.ट.	अम.डॉ./मी.ट.
क्षति रहित कीमत	***	***
पहुंच मूल्य	50,308	884.37
क्षति मार्जिन	***	***
क्षति मार्जिन %	***	***
क्षति मार्जिन % (रेंज)	35-55	35-55

77. यह नोट किया जाता है कि उपर्युक्तानुसार क्षति मार्जिन का स्तर काफी अधिक माना जाता है।

#### ड. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्य तौर पर पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहारों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति लाई जा सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय लगाए जाने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

79. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तु के प्रयोग से विनिर्मित उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मक पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी, खासकर तब जब पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित होगा। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और उपभोक्ताओं के लिए संबद्ध वस्तु का व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।

#### ड. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण पश्चात अनुरोध

##### ड.1 विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण पश्चात अनुरोध

80. किसी भी निर्यातक/आयातक/प्रयोक्ता और अन्य विरोधी हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन विवरण पश्चात कोई अनुरोध नहीं किया है।

##### ड.2 प्रकटन विवरण पश्चात घरेलू उद्योग के अनुरोध

81. प्रकटन विवरण के पश्चात घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्नानुसार हैं:—

- (i) याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तु भेषज/खाद्य/कीटनाशक/सिरेमिक आदि जैसे सभी प्रकार के उद्योगों के लिए है। यह उत्पाद ऐसा है जिसे आगे संसाधित नहीं किया जा सकता।

(ii) यह आवेदन विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उद्योग के रूप में मै. पोजी फार्मा कैम. प्रा. लि. द्वारा दायर किया गया है। मै. सुनील कैमिकल्स ने आवेदन का समर्थन किया है। आवेदक का उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है।

(iii) उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री, बाजार हिस्से, लाभ, नकद प्रवाह, निवेश पर आय, उत्पादकता और मालसूची के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है।

(iv) क्षति रहित कीमत का निर्धारण अनुचित है और इससे घरेलू उद्योग को अनुचित रूप से कम संरक्षण मिल रहा है। घरेलू उद्योग द्वारा स्थापित फेनोल के मूल संयंत्र का पूर्ण मूल्यहास हो जाने की स्थिति में निवल स्थायी परिसंपत्तियां लाभ के निर्धारण का आधार नहीं बन सकतीं। संयंत्र की काफी अधिक अवधि होने के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग हेतु आय की उच्चतर दर पर विचार करना चाहिए।

(v) शुल्क को अम.डॉ. में निर्धारित मात्रा में लगाया जाना चाहिए।

### ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

82. प्राधिकारी ने नोट किया कि प्रकटन विवरण के पश्चात किए गए अधिकांश अनुरोध पुनरावृत्ति के स्वरूप के हैं और उन पर प्रकटन विवरण में पहले ही कार्रवाई की जा चुकी है। तथापि, प्रकटन विवरण के पश्चात किए गए अनुरोधों की पुनः जांच की गई है और उन पर निम्नानुसार कार्रवाई की गई है :

- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि शुल्क को अम.डॉ. में निर्धारित मात्रा में लगाया जाना चाहिए, प्राधिकारी ने इस तर्क को नोट किया है और उस पर इन जांच परिणामों में समुचित ध्यान दिया गया है।
- जहां तक क्षति रहित कीमत के निर्धारण से संबंधित तर्क का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी के लिए पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में निर्धारित सिद्धांतों और पिछली नजीरों को ध्यान में रखते हुए क्षति रहित कीमत तथा क्षति मार्जिन का निर्धारण करना अपेक्षित होता है।

### ण. निष्कर्ष

83. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच करने और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने; और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देश से भारत में विचाराधीन उत्पाद का निर्यात उसके संबद्ध सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है और इस प्रकार उत्पाद का पाटन हुआ है। घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु के बारे में वास्तविक क्षति हुई है। वास्तविक क्षति संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों के कारण हुई है।

### त. सिफारिशें

84. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान की गई थी और पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं उनके कारणात्मक संबंध के बारे में जांच शुरू और संपन्न करने के बाद और सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के उपरांत प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन और परिणामी क्षति को समाप्त करने के लिए पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना अपेक्षित है ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद के आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित घरेलू समान उत्पाद की क्षति रहित कीमत के साथ की गई है।

85. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार, संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका में विनिर्दिष्ट राशि, अधिसूचना सं. 04/2014-सी.शु. (एसजी) दिनांक 31.12.2014 के तहत यथाअधिसूचित लागू रक्षोपाय शुल्क की राशि घटाने के बाद, पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है।

## शुल्क तालिका

क्र. सं.	शीर्ष/उप शीर्ष	वस्तु का विवरण*	निर्दिष्ट	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क की राशि	इकाई	मुद्रा
1	29181520	सोडियम साइट्राइट	सभी ग्रेड	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	367.59	मी.ट.	अम.डॉ.
2	29181520	सोडियम साइट्राइट	सभी ग्रेड	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	कोई भी	367.59	मी.ट.	अम.डॉ.
3	29181520	सोडियम साइट्राइट	सभी ग्रेड	कोई भी	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	367.59	मी.ट.	अम.डॉ.

\*वस्तु का विचाराधीन उत्पाद का विवरण शुल्क तालिका निम्नलिखित वैकल्पिक नामों से भी किया जा सकता है—क. ट्राई सोडियम साइट्रेट, ख. ट्राई सोडियम साइट्रेट डिहाइड्रेट, ग. सोडियम साइट्रेट डिहाइड्रेट, घ. ट्राई बेसिक सोडियम साइट्रेट, ङ. सोडियम साइट्रेट ट्राई बेसिक डिहाइड्रेट, च. सोडियम साइट्रेट ट्राई बेसिक सेसक्विहाइड्रेट, छ. सोडियम साइट्रेट मोनो बेसिक बायोएक्स्ट्रा

86. इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

87. इस अंतिम जांच परिणाम के कारण केन्द्र सरकार के आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

जे.के.दादू, निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING & ALLIED DUTIES)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 26th February, 2015

(Final Findings)

**Subject: Final Findings in the anti-dumping investigation concerning imports of 'Sodium Citrate' originating in or exported from China PR.**

**F. No.14/23/2013-DGAD**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time and (hereinafter referred to as the Act), the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as the AD Rules or the Rules), thereof;

- Whereas the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), under the Rules, received a written application or petition from M/s Posy Pharmachem Pvt. Limited (hereinafter also referred to as the petitioner or the applicant) alleging dumping of Sodium Citrate (hereinafter referred to as the product under consideration (PUC) or the subject goods) from China PR (hereinafter referred to as the subject country), causing injury to the domestic industry of the subject goods in India.
- Whereas the Authority on the basis of sufficient prima facie evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice No. 14/23/2013-DGAD dated 28<sup>th</sup> February, 2014, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating the anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, in accordance with the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping causing injury to the domestic industry and to consider recommendation of the anti-dumping duty.

### A. PROCEDURE

- The procedure described below has been followed in this investigation:
  - The Authority notified the embassy of the subject country in India about the receipt of application alleging dumping of the subject goods originating in or exported from the subject country before proceeding to initiate the investigation in accordance with the Rules.

- ii) The Authority issued a public notice no 14/23/2013-DGAD dated 28th February, 2014, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating the anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country.
- iii) The Authority forwarded a letter along with copy of the public notice to all the known exporters and other interested parties/industry associations (whose details were made available by the domestic industry) and gave them opportunity to make their views known in writing within the prescribed time limits in accordance with the Rules.
- iv) The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters of the subject countries in accordance with the Rules. A copy of the application was also made available to other interested parties, upon request.
- v) Copies of the letter and the exporter's questionnaire sent to the exporters/producers in the subject country were also sent to the embassy of the subject country in India along with a list of known exporters/producers with a request to advise the known exporters/producers from the subject country as also other exporters/producers from the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time limits.
- vi) The Authority sent exporter's questionnaire to elicit relevant information to the following known exporters in the subject country in accordance with the Rules:
  - a. Qingdao Sonef Chemical Company Limited, Shandong, Qingdao, China.
  - b. Weifang Vot International Business Co. Ltd., Shandong, Weifang, China.
  - c. Hai Hui Group Cp., Ltd., Shandong, Rizhao, China.
  - d. Foodchem International Corporation, Shanghai, China.
  - e. Yixing Zhenfen Medical Chemical Co. Ltd., Yixing City, Jiangsu Province, China.
  - f. Hainan Huarong Chemical Co. Ltd., Hainan Haikou, China.
  - g. Lianyungang Dongtai Food Ingredients Co. Ltd., Xinpu District, Jiangsu, Lian Yungang, China.
  - h. Lianyugang Shuren kechuang Food Additive Co. Ltd., Jiangsu, China
  - i. RZBC Co. Ltd., Shandong Province, China.
  - j. Laiwu Taihe Biochemistry Co. Ltd., Shandong Province, China
  - k. RZBC (Juxian) Co. Ltd., Shandong Province, China.
  - l. Weifang Ensing Indstry Co. Ltd., Shandong Province, China
  - m. Yixing Union Biochemical Co. Ltd., Jiangsu Province, China
  - n. DSM Citric Acid (Wuxi) Ltd., Jiangsu Province, China
  - o. Angui BBBCA Biochemical Co. Ltd., Angui Province, China
- vii) None of the exporters from the subject country has submitted any response to the exporter's questionnaire or filed any legal submissions.
- viii) The Authority forwarded a copy of the public notice to the following known importers/users/user associations (whose names and addresses were made available to the Authority) of the subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(4):
  - a. Crystal Crop Protection Pvt. Ltd., Delhi
  - b. Desmo Exports, Maharashtra.
  - c. New Drug & Chemical Co., Maharashtra.
  - d. Colorcon Asia Private Limited, Maharashtra.
  - e. ACID-India, Mulratra , Mumbai
  - f. Pradip Kumar Pharma Pvt. Ltd., Mumbai
  - g. Amijal Chemicals, Mumbai
  - h. Adani Pharmachem Pvt. Ltd, Rajkot.
  - i. Sujata Chemicals, Vadodara
  - j. Prakash Chemicals Pvt. Ltd., Vadodara
  - k. RM Chemicals, Chennai
  - l. Pfizer Limited, Mumbai
  - m. FDC Limited, Aurangabad
  - n. Wallance Pharmaceutical Ltd, Panaji
  - o. Kaira District Co-op Milk Producers Union Ltd., Anand, Gujarat
  - p. Schreiber Dynamix Daries Ltd., Baramati, Dist. Pune
  - q. Vasa Pharmachem Pvt. Ltd, Ahmadabad
- ix) Only M/s. New Drug & Chemical Company, Mumbai, responded to the Initiation notification and filed importer questionnaire response as well as legal submissions.

- x) The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present investigation was from 01.10.2012 to 30.09.2013. For the purpose of analyzing injury, the data of previous three years, i.e., 2010-11, 2011-12, 2012-13 and the period of investigation has been considered.
- xi) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods into India for the past three years, including the period of investigation, and the said information was obtained from the DGCI&S and has been adopted in this investigation.
- xii) Exporters, producers and other interested parties who have neither responded to the Authority nor supplied information relevant to this investigation have been treated as non-cooperating interested parties.
- xiii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6 (7).
- xiv) The Authority has examined the information furnished by the domestic producer to the extent possible on the basis of guidelines laid down in Annexure III to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject goods in India so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- xv) In accordance with the Rules, the Authority also provided opportunity to all the interested parties to present their views orally in an Oral Hearing held on 6th January, 2015. Only the domestic industry attended the oral hearing. M/s. New Drug & Chemical Co. did not attend the oral hearing. However, they filed written submission prior to the Oral hearing. Parties which participated in the Oral Hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally.
- xvi) The submissions made by the domestic industry and other interested parties during the course of the investigation and considered relevant by the Authority have been examined and addressed in this investigation.
- xvii) Verification of the information and data submitted by the interested parties was carried out to the extent deemed necessary.
- xviii) Information provided by the interested parties on confidential basis was examined by the Authority with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed. Wherever possible, the interested parties were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xix) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these essential facts on the basis of the 'facts available' and treated such parties as non-cooperative.
- xx) A Disclosure Statement containing the essential facts in this investigation which would have formed the basis of the Final Findings was issued to the interested parties on 12.02.2015. The post Disclosure Statement submissions were received from the domestic industry only and have been considered, to the extent found relevant, in this Final Findings Notification.
- xxi) The submissions made by the interested parties considered relevant by the Authority have been addressed in this Final Findings Notification.
- xxii) \*\*\*in this Final Findings Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.
- xxiii) The weighted exchange rate adopted for the POI is 1 US \$ =Rs 56.89

## **B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND THE LIKE ARTICLE**

### **Views of the Domestic Industry**

- 5. Submissions made by the domestic industry on the product under consideration are as follows:
  - i. The product under consideration in the present petition is "Sodium Citrate". Sodium Citrate is a chemical compound that comes in the form of monosodium citrate, disodium citrate and trisodium citrate. The product under consideration can also be transacted by following alternate names –
    - a. Tri Sodium Citrate
    - b. Tri Sodium Citrate dihydrate
    - c. Sodium Citrate dihydrate
    - d. Tribasic Sodium Citrate
    - e. Sodium Citrate Tribasic Dihydrate

f. Sodium Citrate Dibasic Sesquihydrate

g. Sodium Citrate Monobasic Bioxtra

- ii. Sodium Citrate is mainly used as an expectorant and a urine alkalinizer. It is also used as a pharmaceutical aid and as a food additive in dairy industries which cater to cheese manufacturing and beverages. It is also a water treatment chemical and a laboratory reagent.
- iii. The goods produced by the petitioner are like article to the goods imported in India. Both the products have comparable characteristics in terms of such parameters as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification, etc.
- iv. Comparison of essential product properties in respect of domestically produced product and the imported product would show that the goods produced by the domestic industry are comparable to the imported goods in terms of essential product properties.
- v. Goods produced by the petitioner are for all type of industries like pharma/food/pesticide/ceramic etc. The product is such that it cannot be processed further. The importers are claiming so merely to evade the regulation and prohibition. Because pharma or food grade cannot be imported, the imports are being made in the name of “not for medicinal use”.

#### **Views of the other interested parties**

6. M/s. New Drug & Chemical Company has claimed that the petitioner and supporter Sunil Chemicals produce only pharma grade catering only to pharma & food industries and not to other chemical industries like agrochemicals, electroplating & other Chemical Industries, etc.

#### **Examination of the Authority**

7. The product under consideration for the purpose of present investigation is “Sodium Citrate”. It’s a chemical compound that comes in the form of mono-sodium citrate, disodium citrate and tri-sodium citrate. It is sodium salt of citric acid and has a sour and salty taste. Sodium Citrate is mainly used in pharma industries as an expectorant and urine alkalinizer. It is also used as a pharmaceutical aid, food additive in dairy industries, laboratory reagent in water treatment, acidity regulator in drinks, an emulsifier for oils when making cheese and an antioxidant in food, etc. The product under consideration can also be transacted by the following alternate names:—
  - a. Sodium Citrate
  - b. Tri Sodium Citrate
  - c. Tri Sodium Citrate dihydrate
  - d. Sodium Citrate dihydrate
  - e. Tribasic Sodium Citrate
  - f. Sodium Citrate Tribasic Dihydrate
  - g. Sodium Citrate Dibasic Sesquihydrate
  - h. Sodium Citrate Monobasic Bioxtra
8. Sodium Citrate is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act under customs subheading 29181520. The customs classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.
9. With regard to like article, Rule 2(d) of the AD Rules provides as under:
 

*"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."*
10. After considering the information on record, the Authority has determined that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject country. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from subject country are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods. The consumers are using the two interchangeably.
11. With regard to the argument of the interested parties that the domestic industry produces Sodium Citrate for Pharma grade only, the Authority notes that the argument has not been substantiated. It is further noted from the evidence on record that the domestic industry has produced and sold its product to different segments apart from pharma and food industries like photographic, agro and chemical industry. It is, therefore, concluded that the goods produced by the applicant domestic industry are used in all type of industries like Pharma/food/pesticide etc.

**C. DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING****Views of the Domestic Industry**

12. The submissions made by the domestic industry regarding the domestic industry and its standing are as follows:-
- Present application has been filed by M/s Posy Pharmachem Private Limited. The application was supported by Sunil Chemicals. There are four other producers who are known to have created capacity to produce the product concerned in India, namely, Amijal Chemicals, Sujata Chemicals, Vasa Pharmachem Pvt. Ltd. and Adani Pharmachem Private Ltd.
  - As per the market intelligence of the petitioner, Vasa Pharma, Adani Pharma and Sujata Chemicals were earlier producing the product concerned. However, due to continued dumping, they have shifted to imports and started trading the imported product. According to the petitioner's information, these companies have not been known to have produced the product under consideration at all over the injury period. Amijal Chemicals is known to produce as well as import the subject goods.
  - Further, Ishita Drugs And Industries Ltd., Navnidh Pharma Lab, G. Amphray Laboratories, Wang Pharmaceuticals & Chemicals and V M Chemicals are the companies who have been selling the product under consideration in the market. Petitioner is, however, not aware whether these companies are selling the imported product or have some manufacturing operations. Petitioner has considered their known sales volumes and presumed the same as production. It is submitted that the petitioner constitutes a major proportion in the Indian production.
  - M/s. Ishita Drugs and Industries Ltd. had participated in the safeguard investigation conducted and admitted that they were earlier producing the subject goods and have later on been importing and selling the subject goods.

**Views of the other interested parties**

13. No submissions have been made by the interested parties on the domestic industry and its standing.

**Examination by the Authority**

14. Rule 2(b) of the AD Rules defines the domestic industry as under: -  
*"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers"*
15. The petition has been filed by M/s Posy Pharmachem Private Limited as the domestic industry of the product under consideration. M/s Sunil Chemicals has supported the application. The petitioner has submitted that there are various other companies who have built capacities for the product under consideration but have now started trading the product and are selling the product in the domestic market. However, since actual status of these companies is not known to the petitioner, their known sales have been considered as production. As per the evidence available on record, the production of the petitioner accounts for major proportion of the total domestic production of the subject goods in India. It is thus determined that the application has been made by or on behalf of the domestic industry and the application satisfies the requirements of 'standing' under Rule 5 of the AD Rules. Therefore, the petitioner constitute 'Domestic Industry' in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.

**Assessment of Dumping – Methodology and Parameters****D. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN****Normal value in China PR****MET examination and normal value for all producers and exporters from China PR**

16. The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO Members. Therefore, in terms of Para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules, China PR is to be treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the Rules.
17. As per Paragraph 8 of the Annexure I to the Anti Dumping Rules, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and establish to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-
- The decisions of the concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

- b). The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
  - c). Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms; and
  - d). The exchange rate conversions are carried out at the market rate.
18. It is noted that none of the producers/exporters of the subject goods from China PR has submitted their questionnaire responses and responses to the market economy questionnaire consequent upon the initiation notice issued by the Authority and none of the producers/exporters has sought to rebut the non-market economy presumption.

#### **Views of Domestic Industry**

19. It has been contended by the domestic industry that China PR should be treated as non-market economy country, inter alia, stating that:
- a. Market economy status cannot be given in a situation where one of the major shareholders is a State owned/controlled entity. The Designated Authority and the EC have consistently held that possibilities of State interference cannot be ruled out in such cases. It is being held that it is not only the question of past interferences alone, but also possibilities of potential State interference in the future after the imposition of anti dumping duties that is relevant to market economy treatment.
  - b. Market economy status cannot be given unless the responding Chinese exporters establish that the prices of major inputs substantially reflect market values and “substantially reflect market values” has been widely interpreted to mean that the price of these inputs must be comparable to the prices prevailing in the international market. The fact that such prices are comparable to the price prevailing in China is grossly insufficient.
  - c. Market economy status cannot be given unless the responding exporters establish that their books are audited in line with international accounting standards. The market economy treatment must be rejected in such situations where Chinese exporters are unable to establish that their books are consistent with International Accounting Standards (IAS). The requirement on insisting compliance with International Accounting Standards is to ensure accuracy and adequacy of revenues and expenses, assets and liabilities expressed in the annual report.
  - d. Market economy status cannot be granted even if one of the parameters is not satisfied. The market economy status cannot be granted unless the responding Chinese exporters pass the test in respect of each and every parameter laid down under the rules. This situation is just the opposite of the test required for material injury. It is well acknowledged position that a positive finding of injury can be recorded even if one single parameter had established injury. Thus, while one parameter is sufficient to establish existence of injury, failure to pass one single parameter is sufficient to reject the claim of market economy status.
  - e. Onus/obligations – It is not for the Authority to establish that the Chinese companies are indeed operating under the market economy environment and are entitled for market economy treatment. On the contrary, it is for the Chinese exporters to establish that they are operating under the market economy conditions.
  - f. Response from group as a whole – Market economy status cannot be granted unless the responding company and its group as a whole make the claim. If one or more companies forming part of the group have not filed the response, the market economy status must be rejected.
  - g. Transformation – In a situation where the current shareholders have not set up their production facilities themselves but have acquired the same from some other party, the market economy status cannot be granted unless process of transformation has been completely established through the documentary evidence.

#### **Examination and determination of normal value by the Authority for producers and exporters in China PR**

20. The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by India and the other WTO Members subject to the rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters/producers in terms of the AD Rules.
21. As per Paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules, the presumption of a non-market economy may be rebutted, if the exporter(s)/producer(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) of Paragraph 8 and establish the facts to the contrary. The co-operating exporters/producers of the subject goods from China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Authority to consider the following criteria as to whether: -
- the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect the market values;
  - the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;



- such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms; and
  - the exchange rate conversions are carried out at the market rate.
22. The Authority notes that consequent upon the initiation notice issued by the Authority; none of Chinese producers/exporters has submitted the questionnaire responses including the market economy questionnaire response and sought to rebut the non-market economy presumption. Since none of the Chinese companies has claimed the market economy treatment, the Authority has not determined whether any of the Chinese producers could be granted the market economy treatment.

#### **Determination of Normal Value in respect of Exporters/Producers from China PR**

23. As none of Chinese producers and exporters has submitted the questionnaire responses, the Authority has estimated the Normal Value in China PR on the basis of Para-7 to Annexure-I to the AD Rules.
24. Para 7 of Annexure I of the AD Rules provides that:  
*“In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments”.*
25. Considering that there has been no response from any exporter/producer of the subject goods from China PR and further noting that information/data regarding appropriate market economy third country for determination of normal value in China PR is not available on record, the Authority has determined the normal value in China PR on ‘other reasonable basis’, in terms of Para 7 of Annexure 1 to the AD Rules. Accordingly, the ex-works Normal Value of the product under consideration has been determined based on the constructed costs of production, duly adjusted.
26. The Authority has constructed the normal value for China PR on the basis of the cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit and considering the international prices of major raw materials. Accordingly, the constructed normal value so determined for Chinese exporters is shown in the Dumping Margin Table below.

#### **EXPORT PRICE**

27. As none of the exporter/producer has provided any information that can be used for determination of the export price, the Authority has determined the ‘Export Price’ for all exporters from China PR on the basis of imports into India. For the purpose of determining the net export price, the Authority has taken into account the transaction wise import data received from DGCIS. In view of non cooperation from Chinese producers, price adjustments have been allowed on the basis of facts available. Accordingly, export price has been adjusted for ocean freight, marine insurance, commission, port expenses, bank charges, inland freight, VAT difference etc. The net export price worked out by the Authority is shown in the Dumping Margin table below.

#### **DUMPING MARGIN**

28. Considering the Normal Value and Export Price as determined above, the dumping margin has been determined as in the table below.

**Dumping Margin Table**

Particulars	US\$/MT	Rs/MT
Constructed Normal Value	***	***
Export Price	***	***
Dumping Margin	***	***
Dumping Margin %	***	***
Range %	50-70	50-70

### **E. INJURY DETERMINATION AND CAUSAL LINK**

#### **Views of the Domestic Industry**

29. The submissions made by the domestic industry with regard to injury and causal link are as follows:

- i. ADD has been levied on the subject country by US, EC and Brazil. The reason for global dumping of the product by China is the reason of huge demand supply gap existing in China.
- ii. Volume of imports from the subject country has increased significantly in the POI. Subject imports constitute almost 96% of the total imports into the domestic market in the POI. Market share of the subject imports has increased. The subject imports capture almost 60% of the Indian market.
- iii. The imports in relation to production and demand are very significant and the same have increased despite such high share.
- iv. The landed price of the subject imports has been substantially below the selling price of the Domestic Industry throughout the injury period, causing significant price undercutting.
- v. Landed price of the imports has remained significantly below the levels of cost of sales and the selling price of the domestic industry throughout the injury period. Low priced dumped imports forced the domestic industry to maintain its selling price below the levels of cost of sales. Thus, the imports are suppressing the prices of the domestic industry throughout the injury period.
- vi. The imports are suppressing the prices of the domestic industry in the market. It could be seen that the domestic industry has been forced to sell at prices where it is suffering significant financial losses and, thus, is suffering price injury.
- vii. Domestic industry increased its capacity in 2012-13 in view of the significant demand in India. Even though production has also increased, the same has, however, remained much below the level of demand in India. Sales of the domestic industry have increased over the injury period with some decline in the POI. The domestic industry has been able to show some improvement in volume parameters. The domestic industry has, however, suffered significant financial losses. Further, in a situation when the demand is more than the capacities, the domestic industry is expected to achieve reasonable profits.
- viii. The financial losses are crippling the Domestic Industry. The return on capital employed has remained negative throughout the injury period. The Domestic Industry's losses have only mounted over the course of the injury period. Financial losses throughout the injury period are due to dumping of the product under consideration.
- ix. Performance of the domestic industry deteriorated in respect of profits, cash profits and return on capital employed, whereas the performance remained adverse in respect of production, sales volumes, capacity utilization and market share.
- x. Despite enhancement of capacities, existence of sufficient demand in the country and such sub-optimal prices offered, the domestic industry is not able to utilize its capacities.
- xi. The inventories of the domestic industry have been piling up over the entire injury period despite efforts of the domestic industry to sell even at a loss.

**View of the importers/consumers and other interested parties**

30. The submissions made by the interested parties with regard to injury and casual link are as follows:
  - (a) Our stand is that anti dumping duty on Sodium Citrate should not be imposed because all the importers are importing Sodium Citrate as "Not for Medicinal Use". So it is not affecting the business of Indian manufacturer.
  - (b) Posy Pharma Chem and Sunil Chemicals are producing only Pharma Grade Sodium Citrate IP. So they are only catering to Pharma & Food Industries and not to other Chemical Industries whereas our all importers are importing Sodium Citrate as "Not for Medicinal Use". So these importers are catering to companies other than Pharma and Food Industries like Agrochemicals, Electroplating & other Chemical Industries.
  - (c) Further, apart from Posy Pharmachem Pvt. Ltd. and Sunil Chemicals, lots of other manufacturers are producing Sodium Citrate IP, namely, Amijal Chemicals, Vasa Pharma, Devendra Kirti Pharma Chem P. Ltd. and Adani Pharmachem P. Ltd. They all manufacture Sodium Citrate for industries other than Pharma & Food Industries. So if we put duty, the other than Pharma & Food Industries like Chemical Allied Industries may suffer.
  - (d) China is producing Sodium Citrate by Fermentation Process and in India we import Citric Acid & mix it with Caustic Soda for manufacturing of Sodium Citrate. So we depend on China for Citric Acid. If we put antidumping duty on Sodium Citrate, then Chinese manufacturers may increase citric acid rate in future.

**Examination by the Authority**

31. The opposing interested parties have essentially claimed that Posy Pharmachem and Sunil Chemicals are producing only Pharma Grade Sodium Citrate IP and, thus, they are only catering to Pharma & Food Industries and not to Chemical Industries like Agrochemicals, Electroplating & other Chemical Industries, whereas all importers are importing Sodium Citrate as "Not for Medicinal Use" to be used in industries other than Pharma and Food Industries like Agrochemicals, Electroplating & other Chemical Industries and other manufactures Sodium Citrate in India are also manufacturing Sodium Citrate for Indian companies who are using the subject goods for other than Pharma and Food Industries like Agrochemicals, Electroplating & other Chemical Industries.

The Authority has examined this aspect and noted that the argument has not been substantiated by the opposing interested parties by any documentary evidence at all. However, on the other hand, it is noted from the documentary evidence submitted by the domestic industry that they have sold the subject goods to different segments apart from pharma and food industries like photographic, agro and chemical industry. It is, therefore, concluded that the goods produced by the applicant domestic industry are used in all type of industries like Pharma/food/agro/ photographic and other chemical industries.

32. Rule 11 of the AD Rules read with its Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” While considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
33. Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.
34. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry, para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows:
- “The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping, actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”*
35. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules supra.

#### Demand and market share

36. For the purpose of assessment of the domestic consumption/demand of the subject goods, the sales volume of domestic industry and other Indian producers have been added to the total imports into India and the same has been summarized below:

Particulars	Units	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Sales of Domestic Industry	MT	607	1,319	1,229	1,191
Sales of supporting company	MT	1,221	1,462	1,452	1,375
Sales of Other Producers	MT	233	307	335	234
Subject country-Imports	MT	2,578	2,666	3,526	3,774
Other Countries-Imports	MT	39	174	193	170
Total demand/consumption	MT	4,678	5,928	6,736	6,744

37. It is noted that the demand has shown a positive trend throughout the injury period.

#### **F. Volume Effects of Dumped Imports**

##### Import Volume and Market Share

38. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied on the transaction wise import data procured from DGCI&S. The volume of imports of the subject good from the subject country has been analyzed as under:

Particulars	Units	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Imports (Total)	MT	2,617	2,840	3,719	3,945
Subject Country	MT	2,578	2,666	3,526	3,774
Other Countries	MT	39	174	193	170
Market share in Imports					
Subject Country	%	98.5%	93.9%	94.8%	95.7%
Other Countries	%	1.5%	6.1%	5.2%	4.3%
Market share in demand					
Subject Country's Import	%	56.3%	50.9%	53.9%	57.5%
Other Countries' Imports	%	0.8%	3.3%	3.0%	2.6%
Sales of Domestic Industry	%	13%	22%	18%	18%
Sale of Supporter	%	26%	25%	22%	20%
Domestic industry & Supporter	%	39%	47%	40%	38%
Other Indian producers	%	5.1%	5.9%	5.1%	3.6%
Total	%	100.0%	100.0%	100.0%	100.0%
Imports from China PR in relation to					
Indian production	%	97.07%	89.43%	105.97%	117.29%
Consumption in India	%	56.3%	50.9%	53.9%	57.5%

39. It is noted from the table above that import of the subject goods from subject country has increased significantly in the POI from the base year. Majority of imports are from the subject country. Subject country constitutes 95% of the total imports. Further, the imports from subject country have also increased in relation to production and consumption in India and are significant. Thus, there is a clear evidence of significant increase in imports from the subject country, in absolute terms and relative terms.

#### G. Price effect of imports

40. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price suppression and price depression, if any.

#### Price undercutting

41. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry.

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Net Sales Realization	Rs./Mt	***	***	***	***
Landed price of imports	Rs./Mt	43,346	50,706	50,540	50,308
Price Undercutting	Rs./Mt	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	% Range	15-25	20-30	15-25	15-25

42. The Authority notes that the landed prices of the subject goods were below the selling price of the domestic industry showing significant price undercutting being caused by the dumped imports from subject country.

#### Price-underselling

43. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject country, as follows:

Particulars	Unit	China PR
Non Injurious Price	Rs./Mt	***
Landed Price	Rs./Mt	***
Price underselling	Rs./Mt	***
Price underselling %	%	***
Price underselling %	% Range	30-50

44. It is noted from the above table that the domestic industry has suffered significant price underselling during the investigation period on account of imports of the subject goods from the subject country.

#### **Price Suppression and Depression**

45. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. Table below shows the factual position:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Landed Value of imports	Rs./Mt	43,346	50,706	50,540	50,308
Cost of Sales	Rs./Mt	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	127	120	113
Selling Price	Rs./Mt	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	124	114	117

46. It is noted that the landed price of imports has remained below the level of cost of sales and the selling price of the domestic industry. It is further noted that the cost of sales of the domestic industry has increased by 13% whereas the selling price of the subject good has increased by only 17% over the injury period. Thus, the imports of the subject goods during the injury period have caused price suppression and the domestic industry has been forced to sell goods below its cost of sales.

#### **H. Economic parameters of the domestic industry**

47. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

48. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed herein below:

##### **i. Production, capacity and capacity utilization of the Domestic Industry**

49. The production, domestic sales, capacity & capacity utilization of the domestic industry has been stated as follows:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Capacity	MT	2,700	2,700	2,700	3,025
Production	MT	1,285	1,357	1,727	1,792
Capacity Utilization	%	47.58%	50.26%	63.97%	59.24%
Domestic Sales volume	MT	607	1,319	1,229	1,191

50. The Authority notes domestic industry has enhanced capacity within the present injury period in view of the increase in demand in the Country. Domestic industry has submitted that even though production has also increased, the same have remained much below the level of demand in India.
51. It is noted from the above table that production of the domestic industry has increased and sales of the domestic industry have also increased over the injury period with some decline in the POI from the previous year. Capacity utilization has increased with some decline in the POI.

**ii. Market share**

52. The effects of the dumped imports on the domestic sales and the market share of the domestic industry have been examined as below:

Market Share in Demand	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Sales of Domestic Industry	%	13%	22%	18%	18%
Sales of Domestic Industry & Supporter	%	39%	47%	40%	38%
Sales of Other Producers	%	5%	5%	5%	3%
Subject Country – Imports	%	55%	45%	52%	56%
Other Countries - Imports	%	1%	3%	3%	3%
Total	%	100%	100%	100%	100%

53. It is noted that the market share of the domestic industry has increased over the injury period but there is decline in the POI from the previous year. The market share of the subject country in demand has increased. The majority share of the domestic market is being held by the subject country.

**iii. Profits, return on investment and cash flow**

54. The cost of sales, selling price and profit/loss of the domestic industry has been analysed as follows:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Cost of sales	Rs./Mt	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>127</i>	<i>120</i>	<i>113</i>
Selling price	Rs./Mt	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>124</i>	<i>114</i>	<i>117</i>
Profit/Loss	Rs./Mt	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>-100</i>	<i>-138</i>	<i>-139</i>	<i>-98</i>
Profit/Loss	Rs. Lakh	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>-100</i>	<i>-300</i>	<i>-281</i>	<i>-191</i>
PBIT	Rs. Lakh	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>-100</i>	<i>-302</i>	<i>-281</i>	<i>-189</i>
Cash Profit	Rs. Lakh	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>-100</i>	<i>-305</i>	<i>-279</i>	<i>-188</i>
ROI	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Range</i>	<i>-100</i>	<i>-178</i>	<i>-209</i>	<i>-90</i>

55. It is noted from the above table that the selling price of the domestic industry has remained below the level of cost of sales of the domestic industry. The difference between selling price and cost of sales has widened over the injury period. Resultantly, the domestic industry has incurred losses throughout the injury period and the losses have further intensified in the POI. Similarly, the return on investment and cash profits have remained negative.

**iv. Inventories**

56. The data relating to inventory of the subject goods is shown in the table below:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Opening stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>213</i>	<i>296</i>	<i>492</i>

57. It is noted from the above table that the average stock has increased throughout the injury period with significant increase in the POI from the previous year.

**v. Employment and wages**

58. The position with regard to employment and wages is as follows:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Number of employees	No.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	181	198	196
Wages	Rs. Lakh	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	127	153	196

59. It is seen that both employment and wages show increase over the period.

**vi. Productivity**

60. Data relating to productivity shows as follows:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Productivity per day	No.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	100	102	129	136

61. It is noted that productivity in terms of production per day has increased in the POI in consonance with the movement of production by the domestic industry.

**vii. Magnitude of Dumping**

62. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margin determined against the subject country is above de minimis and significant.

**viii. Ability to raise capital investment**

63. It is noted that given the state of affairs of the domestic industry where the product is consistently not performing well over last few years, substantial fresh investments would be difficult.

**ix. Factors affecting domestic prices**

64. Consideration the import prices from the subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market show that the landed value of imported material from the subject country is significantly below the selling price, cost of sales and non injurious price of the domestic industry, causing significant price undercutting and underselling in the Indian market. It is noted that there are no significant imports of the product under consideration from other countries and there is no viable substitute to this product. It is also noted that demand for the product was showing increase and could not have been a factor responsible for price depression faced by the domestic industry. It is, thus, evident that the only factors responsible for the domestic industry's prices are the import prices of the product from the subject country and the cost of production of the domestic industry. As the information shows, whereas the cost of production increased, the import prices are much lower than the costs of the domestic industry, suppressing the prices of the subject goods produced by the domestic industry. Thus, the landed price of the subject goods from the subject country is a major factor affecting the domestic industry's prices.

**x. Growth**

65. There has been significant growth in the import volumes of the subject goods from the subject country. The growth of the domestic industry in terms of sales and production was negative. Similarly, growth of the domestic industry in respect of profits, cash profit and return on investment was also negative.

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Production	%	-	6%	27%	4%
Domestic Sales Volume	%	-	117%	-7%	-3%
Cost of Sales	%	-	27%	-6%	-6%
Selling Price	%	-	24%	-8%	3%

**I. Conclusion on material injury**

66. After examining the volume and price effects of imports of subject goods from subject country and its impact on the domestic industry, it is noted that the dumped imports of the subject goods from the subject country has increased significantly in absolute terms as also in relation to production and consumption of the subject goods in

India. Other volume parameters like sales, production and capacity utilization, though have shown increase over the injury period, have been below the optimum level. Market share of the domestic industry has declined. It is thus noted that domestic industry has suffered significant volume injury on account of dumped imports of the subject goods from the subject country. Further, with regard to the price effect on account of imports of the subject goods from the subject country, it is noted that imports of the subject goods from the subject country are significantly undercutting the prices of the domestic industry. The domestic industry has suffered price suppression on account of imports of the product under consideration from the subject country as selling price of the subject goods could not increase in proportion to the increase in the cost of production of the subject goods during the injury period. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, it is concluded that the performance of the domestic industry has deteriorated in respect of production, capacity utilization, domestic sales, market share, profit, cash flow, return on investment, productivity and inventories. The decline in profits, return on investment and cash flows is quite significant and material. Thus, the Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury.

**J. Other Known Factors & Causal Link**

67. Having examined the existence of material injury, volume and price effects of the dumped imports on the prices of the domestic industry in terms of its price undercutting, underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti-Dumping have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports, could have contributed to the injury to the domestic industry.

**(a) Volume and prices of imports from third countries**

68. It is noted that imports of the product under consideration from other countries are at higher price or are negligible in terms of volume.

**(b) Contraction of demand and changes in the pattern of consumption**

69. There has been a constant rise in demand of the product concerned throughout the injury period. Possible decline in demand is not as a possible reason of injury to the Domestic Industry.

**(c) Developments in technology:**

70. Technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, development in technology is not a factor causing injury to the domestic injury.

**(d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

71. There is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the Domestic Industry.

**(e) Export performance of the domestic industry**

72. The injury information examined by the Authority is for domestic operations and, therefore, possible decline in exports volume has not caused injury to the Domestic Industry.

**(f) Productivity of the Domestic Industry**

73. It is noted that the productivity of the domestic industry in terms of production per day has increased over the period.

74. It is thus noted that listed known other factors do not show that the domestic industry could have suffered injury due to these other factors. The Authority examined whether the dumping of the product has caused injury to the domestic industry. The following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:

- a. The imports of the subject goods from the subject country were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Resultantly, the domestic industry was forced to reduce its prices significantly. The price suppression suffered by the domestic industry is primarily because of dumping of the product in the country.
- b. The domestic industry was forced to reduce its prices even below cost of production causing financial losses. The losses suffered by the domestic industry have further mounted over the injury period.
- c. Performance of the domestic industry with regard to profits, cash flow and return on investments deteriorated as a result of price suppression. Thus, dumping of the product has led to deterioration in performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow and return on investments.



75. It is, therefore, concluded that the domestic industry suffered material injury due to dumped imports.

#### **K. Magnitude of Injury Margin**

##### **Injury Margin**

76. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry so determined has been compared with the landed value of the imports from the subject country for determination of injury margin during the POI. The injury margin so determined is as under:-

Parameters	China PR	
	Rs./MT	US \$/MT
NIP	***	***
Landed Value	***	***
Injury Margin	***	***
Injury Margin %	***	***
Injury Margin % (Range)	35-55	35-55

77. It is noted that the level of injury margin, as above, is considered significant.

#### **L. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES:**

78. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country/territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

79. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of this product. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline in the performance of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

#### **M. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS BY THE INTERESTED PARTIES**

M.1 Post Disclosure Statement submissions by the opposing Interested Parties

80. None of the opposite interested parties have filed the post Disclosure Statement submissions.

M.2 Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry

81. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the domestic industry:

- (i) Goods produced by the petitioner are for all type of industries like pharma/food/pesticide/ceramic etc. The product is such that it cannot be processed further.
- (ii) The petition has been filed by M/s Posy Pharmachem Private Limited. M/s Sunil Chemicals has supported the application. The production of the petitioner accounts for major proportion of the total domestic production of the subject goods in India.
- (iii) Performance of the domestic industry has deteriorated in terms of production, capacity utilization, domestic sales, market share, profit, cash flow, return on investment, productivity and inventories.
- (iv) Determination of non injurious price is inappropriate and is leading to unduly low protection to the domestic industry. Net Fixed Assets cannot form the basis for determination of profits when the original phenol plant setup by the domestic industry is already fully depreciated. Given the high age of the plant, the Designated Authority should consider higher rate of return for the domestic industry.
- (v) Anti dumping duty should be imposed only as fixed quantum in US Dollars.

**M.3 Examination by the Authority**

82. The Authority notes that most of the post disclosure statement submissions made by the domestic industry are repetitive in nature and have already been dealt with in the Disclosure Statement and again have been addressed in this Final Findings Notification under the appropriate headings. Nonetheless, the Authority has addressed these issues to the extent considered relevant as under:
- As regards the contention that the duties should be imposed in the fixed quantum in US\$, the Authority has noted the argument and the same has been appropriately taken care in these findings.
  - As regards the contention on the non injurious price determination, the Authority notes that the authority is required to determine NIP and injury margin having regard to principles laid down under Annexure III of the AD Rules and past precedents.

**N. CONCLUSION**

83. After examining the submissions made by the opposing interested parties and the domestic industry and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that the product under consideration has been exported to India from the subject country below its associated normal value, thus, resulting in dumping of the product. The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods. The material injury has been caused by the dumped imports from the subject country.

**O. RECOMMENDATIONS**

84. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the domestic industry, exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti-dumping duty is required to offset dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.
85. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in the table below, after reducing the amount of applicable safeguard duty as notified vide Notification No. 04/2014-Customs (SG) dated 31.12.2014, is recommended to be imposed from the date of the Notification to be issued by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.

**Duty Table**

S. No.	Sub-heading	Description of Goods*	Country of origin	Country of exports	Producer	Exporter	Amount	Unit of measurement	Currency
1.	29181520	Sodium Citrate	China PR	China PR	Any	Any	367.59	MT	US\$
2.	29181520	Sodium Citrate	China PR	Any	Any	Any	367.59	MT	US\$
3.	29181520	Sodium Citrate	Any	China PR	Any	Any	367.59	MT	US\$

\* Note:-The Description of the Goods in the Duty Table above includes the following alternate names as well:-  
 (a). Tri Sodium Citrate; (b). Tri Sodium Citrate dehydrate; (c). Sodium Citrate dehydrate; (d). Tribasic Sodium Citrate; (e). Sodium Citrate Tribasic Dihydrate; (f). Sodium Citrate Dibasic Sesquihydrate; (g). Sodium Citrate Monobasic Bioxtra.

86. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
87. An appeal against the order of the Central Government arising out of these findings shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

J. K. DADOO, Designated Authority